ग्लोकोमा या काला मोतिया को अति गंभीरता से लें

> डॉ. प्रकाश अग्रवाल

क्योंकि... सुन्दर सूर्योदय को... सुना नहीं जा सकता!

नेत्र संबंधी कोई समस्या आपसे आपकी अमूल्य दृष्टि क्षमता एवं जीवन का आनंद छीन सकती है, अतः आपको रहना है सजग एवं सावधान। ग्लोकोमा एक ऐसी ही नेत्र संबंधी आपदा है जो आपको अंधत्व की ओर ले जा सकती है। इस लेख के द्वारा हम आपको बताएँगे कि यह बीमारी क्या है, और इसके प्रति सावधानी महत्वपूर्ण क्यों है? हम आपको बता दें कि ग्लोकोमा अंधेपन का दूसरा सबसे बड़ा कारण है। मधुमेह के रोगियों में ग्लोकोमा सामान्य व्यक्तियो की तुलना में बहुत अधिक पाया जाता है।

काला मोतिया आँखों का एक रोग है जिसके कारण दृष्टि को हमेशा के लिए नुकसान हो सकता है। ये गंभीर है, क्योंकि इसमें किसी तरह के शुरुआती संकेत नहीं मिलते। असल में ऐसा हो सकता कि आप काला मोतिया से ग्रस्त हों लेकिन आपको इसका पता भी न हो। जब तक आपको दृष्टि के नुकसान का आभास हो, हो सकता है कि उसके पहले ही स्थायी नुकसान हो चुका हो। इतना ही नहीं काला मोतिया ग्रस्त माता–पिता या भाई–बहन होने से उनके रक्त संबंधियों में यह स्थिति आने की संभावना बढ़ जाती है।

काला मोतिया से अपनी दृष्टि की रक्षा कैसे करें, इस बारे में अधिक जानकारी के लिए हम आपको एक नेत्र विशेषज्ञ डॉ. प्रकाश अग्रवाल और ग्लोकोमा के मरीज़ की बातचीत प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे आप इस बीमारी के बारे में विस्तार से जान सकेंगे :–

ग्लोकोमा पीड़ित : डॉक्टर साहब आपने बताया कि मुझे 'ग्लोकोमा' है। वास्तव में यह ग्लोकोमा क्या है?

नेत्र विशेषज्ञ डॉ. प्रकाश अग्रवाल : वास्तव में हमारी आँख में एक द्रव/फ्लुड ''एक्वस ह्युमर'' भरा होता है जो कि आँख के अंदर के विभिन्न अंगों से होकर प्रवाहित होता है एवं आँख के अन्दर निश्चित दबाव बनाए रखता है। जब किन्हीं कारणों से इसका प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है तो आँख के अंदर दबाव बढ़ने लगता है, यह दबाव आँखों की नस (Optic Nerve) को क्षतिग्रस्त कर देता है। लम्बे समय तक नियंत्रित न किये जाने पर यही बढ़ा हुआ दबाव ग्लोकोमा से होने वाले अंधत्व का कारण बनता है।

मरीज़ : डॉक्टर, वे क्या जोखिम हैं जो ग्लोकोमा का कारण बन सकते हैं?

डॉ. प्रकाश अग्रवाल : ग्लोकोमा के कारण निम्न हो सकते हैं–

- 40 वर्ष या उससे अधिक उम्र।

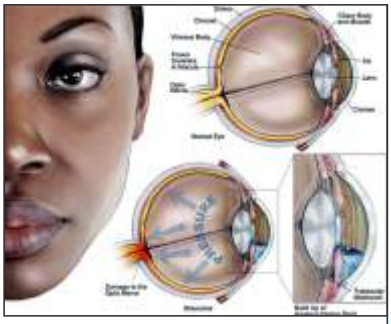

- परिवार में ग्लोकोमा का पाया जाना।
- मधुमेह (डायबिटीज़)।
- बढ़ा मायोपिया (माइनस नम्बर का चश्मा)।
- आँख की कोई शल्य क्रिया या चोट।

मरीज़ : ग्लोकोमा की गम्भीरता अब मैं समझ पा रहा हूँ फिर भी डॉक्टर, मुझे अब तक कोई खास लक्षण या दृष्टि में समस्या महसूस नहीं हुई है। क्या तब भी आपको लगता है कि मैं ग्लोकोमा जैसी गंभीर स्थिति से ग्रसित हूँ?

डॉक्टर प्रकाश अग्रवाल : बहुत अच्छा सवाल पूछा है आपने। ग्लोकोमा एक गुप्त शत्रु है एवं अधिकांश रोगियों को प्रारंभ में कोई लक्षण महसूस नहीं होते जिसके कारण वे इसे अधिक गंभीरता से नहीं लेते जबकि ग्लोकोमा चुपचाप रोगी को स्थाई अंधेपन की ओर धकेलता रहता है। यह एक दीमक की तरह नज़र को धीमे-धीमे खत्म करता जाता है। दुर्भाग्यवश रोगियों को इसका पता तब चलता है जब तक यह रोग 40 प्रतिशत से अधिक बढ़ चुका होता है। इसके कुछ लक्षण हो सकते हैं, जैसे-

1. आँखें में दर्द, लालपन।
2. चश्मे का नम्बर बार-बार बदलना।
3. आँखों के आगे काले धब्बे आना।

मरीज़ : क्या इस बीमारी के लक्षण होने के पूर्व इसका पता लगाया जा सकता है?

डॉक्टर प्रकाश अग्रवाल : जी हाँ, कुछ जरूरी जाँचों की मदद से ग्लोकोमा का पता लगाया जा सकता है, जो निम्नलिखित हैं :-

1. Intra Ocular Pressure (आँखों का आंतरिक दबाव)
2. Corneal Thickness

(पुतली की मोटाई)

3. Vidual Field Stereoscopy (दृष्टि क्षेत्र परिमापन)
4. Disc Photography (आँखों की पुतली की फोटो)
5. इनके अलावा एक आधुनिक टेस्ट Optic Cornea Tomography (OCT) द्वारा ग्लोकोमा से होने वाली क्षति का पता शुरुआती दौर में लगाया जा सकता है।

मरीज़ : इस बीमारी का इलाज क्या है?

डॉक्टर प्रकाश अग्रवाल : इस बीमारी का इलाज बहुत आसान है। कुछ दवाओं से आँखों के दबाव को कम किया जा सकता है, और नेत्र ज्योति को बचाया जा सकता है। हाँ मगर ध्यान रहे खोई हुई रोशनी वापस आना मुश्किल है।

तो आपने पढ़ा कि ग्लोकोमा एक गम्भीर समस्या है, जो किसी को भी हो सकती है। 40 साल से अधिक आयु के लोग, मधुमेही या माइनस नम्बर का चश्मा लगाने वाले व्यक्ति को खास ध्यान देना चाहिये।

मधुमेह के रोगियों को वर्ष में एक बार नेत्र विशेषज्ञ से आँखों की पूरी जाँच करानी चाहिये। डॉक्टर की सलाह पर आधुनिक जाँच की जा सकती है। अगर ग्लोकोमा का पता चल जाये तो इससे घबराने की जरूरत नहीं है। इसका इलाज Eye Drops से किया जा सकता है। यह एक दीर्घकालिक (Chronic) बीमारी है और इसका इलाज नियमित कराना ज़रूरी है। लापरवाही ख़तरनाक हो सकती है।●●●

"आँखें अनमोल हैं इनका ख्याल रखें"

डॉ. प्रकाश अग्रवाल, भोपाल एम.पी. नगर स्थित प्रकाश आई केयर सेंटर के प्रमुख डॉक्टर हैं। डॉ. प्रकाश अग्रवाल लेज़र, मोतियाबिंद, ग्लोकोमा और डायबिटिक रेटिनोपैथी के विशेषज्ञ हैं। डॉ. प्रकाश अग्रवाल ने के.ई.एम. मुंबई से एम.बी.बी.एस. व ऑल इण्डिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेस (AIMS), नई दिल्ली से एम.डी. (नेत्र रोग) की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। वे देश के उन गिने चुने डॉक्टरों में से एक हैं, जिन्होंने इंग्लेण्ड से नेत्र रोग में FRCS की डिग्री भी प्राप्त की है। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें :-

प्रकाश आई केयर एवं लेज़र सेंटर, फोन : 0755-4064747, 8085133033